Sundarakrita Shiva Stuti

सुन्दरकृता शिवस्तुतिः

Document Information

Text title : Sundarakrita Shiva Stuti 1

File name : sundarakRRitAshivastutiH1.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | sadAshivAkhyaH navamAMshaH | adhyAyaH 18 sundarasyashApaH | 37-47||

Latest update : July 14, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 15, 2024

sanskritdocuments.org

Sundarakrita Shiva Stuti

सुन्दरकृता शिवस्तुतिः

(शिवरहस्यान्तर्गते सदाशिवाख्ये)
सुन्दरः उवाच ।
नाकनायक विनायकस्तुत गरलभक्षक हारतक्षक
कुक्षिसंस्थितलोकरक्षक वीक्षणक्षण(क्षत मन्मथान्तक ।
पाकमुनिसुतजीवदायक हस्तशस्तविरिञ्चिमस्तक
पाहि मामखिलपातकान्तक देव देव भवाम्बुधेः ॥ ३७॥

सुखतारकाव मदुन्मुखप्रभ पार्श्वषण्मुख
दुःखभर्जक सर्गसर्जक तर्जितासुर गर्जनोर्जित
वर्जिताखिलपाप तापनिवारकाव मखोन्मुखो-
त्सुक लेखशिक्षक गाङ्गतुङ्गजटोत्तमाङ्ग-
सुसङ्ग बालकुरङ्ग किणधरलिङ्गसङ्ग भस्मधूसरिताङ्गा-
हस्कारुणितेक्षण क्षतपापस्मर तस्करोत्तम
धनप्रभूत्तम कन्धरेश्वर भूरथस्थित चन्द्रखण्डशिरोमणे ॥ ३८॥

गजचर्मवर्म चराचरास्थित विष्णुचक्रविदायक
पञ्चवक्र चतुर्मुखस्तुत छन्द साङ्गणदायक छादिता-
खिलविश्व जगज्जन्मस्थितिविनाशनाव जञ्जपूक वरप्रदायक ॥ ३९॥

झणझण इव(नव) नूपुरोत्तमपादपङ्कज टङ्कर हर
देवतटिनीजूट जठरीलोक कुण्ठितपापवृन्द विकुण्डपूजितपाद
मृड हर डमरुध्वाननदित भुवनडम्बर कुण्डलीश्वर कुण्डलप्रिय
चण्डभानुसुतार्तिदायक मण्डलीकृतपर्वताधिप चण्डदण्डित-
वैरिपुरवरखण्डनोद्धतकाण्ड गुरुतरमुण्डषण्डविराजितेश्वर
खाण्डवाशनलोचन ॥ ४०॥

पुण्डरीकत्वचाविभूषित वेतण्डवरशुण्डगुरुरम्यभुजदण्ड धारितवर-
कोदण्ड पण्डितोत्तम भण्डजन हर कर्मकाण्डनिषूदन भक्ति-

दृढतरमुक्तिदायक (दृढतरभक्तिमुक्तिदायक) गूढपाद्वर, मूढजनता-
गाढहृत्तमोभेदकार्क ॥ ४१॥

विभूषणीकृतपन्नगेश्वर नगोत्तमवास गुणगणनन्दितानन ताम्यमान
भवस्थितावन, ताम्रसंस्थित, तस्कराधिप, दीनसदयसनाथनाथित
मन्मथान्तक दन्दशूकफणामणिद्युतिरञ्जिताङ्ग दारिद्र(दारिद्र्य)-
नाशक, देव देव दयानिधे ॥ ४२॥

मानवाद्य (मामवाद्य) धनाधिपप्रिय धेनुपुत्र रथप्रियाध्वरशिक्षकावन-
नायकाव विनायकप्रियवाहपूजिताम्बुजपाद नानताखिलमुक्तिदायक
पापभयहर पन्नगप्रिय पत्ररथवर पूज्यमानपदाम्बुज फाणिताखिल
वेदजाल फणीश्वरोत्तमबन्धमोचन बन्धुरालक बिल्वपूजित
बाणलिङ्गविहारशङ्कर ॥ ४३॥

भद्रदायक भस्मभूषित भक्तिदायक भीम भूम महेश्वरेश्वर
मन्मथान्तक विश्वसृग्वर हस्तशस्तकमस्तक यक्षपक्ष
विवर्जितक्षण यक्ष्मरोगविनाशक राजराजकलाविराजितमस्तक
सर्वदेवललाम सोम भवहर भीमलोचन लालितोत्तम हस्तशूल-
सलीलकीलितविश्वक ॥ ४४॥

षण्मुखस्तुत षड्गमध्यग पापपण्डविशोषण सर्वमुनिगण-
हृत्पाथोजविहारभृङ्गवरोत्तम । सामजप्रिय कृत्तिधारण
सामसंस्तुत देव भवहर हारभूतविषोल्बण सत्फणी(णि) गण-
शोभित ॥ ४५॥

हावभावविलासवैभव हारिताखिलविष्टपत्रय क्षत्रियान्तकरामपूजित
दक्षयज्ञविनाशनाव माम् । लोकशिक्षक भिक्षिताखिलमौनिपक्षग
त्र्यक्ष जगदध्यक्ष मामव पाहि माम् । पाहिमामखिलार्तिनाशन हे
महेश्वर किङ्करस्तव शङ्करोऽपि भवेद्वरदयेक्षणात् ॥ ४६॥

रक्ष मां शिव त्र्यक्ष रक्षक पक्षपातदृशा पाहि मां तवापराधिनं
भवमूढं धाष्टर्यपरायणम् । या तवाप्यधिवक्तृता शिव महेश्वर पाहि
मामवाङ्मनोविषयानतेः स्तुतिरियं श्रुतिमौलिजैः । भक्तितः
शशिशेखर महेश्वरेश्वर पाहि माम् ॥ ४७॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते सुन्दरकृता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । सदाशिवाख्यः नवमांशः । अध्यायः १८ सुन्दरस्यशापः । ३७-४७॥

- .. shrIshivarahasyam . sadAshivAkhyaH navamAMshaH . adhyAyaH 18 sundarasyashApaH . 37-47..

Notes:

Sundara सुन्दर; one of the sixty-three Nāyanāra-s, prays to Śiva शिव and also seeks pardon for his error caused while being in service of Śiva शिव in Kailāsa कैलास .

Proofread by Ruma Dewan

Sundarakrita Shiva Stuti

pdf was typeset on July 15, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*